

[illegible]

[illegible]

नागनीनागवाजकानागवाजसूगानागमनागवाजगतिनागवाज
 यन्नाविहृषिगा॥नगध्वनीवगमरुटानागवाजकूलध्वनीनक्तिनन्दक
 लानदीनक्तिनन्दवदत्तगा॥दीलजानीलजाकीवनीलजद्वंद्वलाव
 तनीलखगानीलशावनीलनीम्निनन्दहिनी॥नागयक्षायदीगाया
 नागयक्षायदीकिनी॥नागकमलवरीकुट्टा॥नागकमलवसाहिनी॥नवि
 नकमकीकुट्टा॥ननन्दसुखविगा॥नायकधुमसहिगा॥नायकधुम
 गाविगा॥नायकानन्दनिलया॥नायकानन्दकाविनी॥धर्मकर्मनगा
 निडा॥नर्मकर्मपनायक॥नर्मयोगाननर्मनगा॥नर्मध्वनयनय
 ध॥नर्मकर्मकसहिगा॥नर्मकर्मकयाहिनी॥नननादिगुलयागा

नननानिदप्रपानननययियानिष्का॥निष्कवदुर्ननकावहा
 ॥पूषाधियायूषानगाःपौषीयलपनायल॥पौषाधियायू
 षाधूष्काःपूषादाम्बविरुषिगा॥यूषादायूषीमायूषा॥यू
 षाकाठिरुनेयुदा॥यूनालमगमलमयिगाःयूनालमलमव
 नाधर्वापूर्वपाराविनामिनी॥पुद्गादददयाद्गादगदि
 लायूषायात्रिही॥रुग्नुहीरुग्नुलयीगा॥रुग्नुलयिमका
 त्रिही॥रुग्नुलेलेयुदाथेदरुलिनारुविरुषिगा॥रुग्नुका
 लायूषायात्रिही॥रुग्नुलेलेयुदाथेदरुलिनारुविरुषिगा॥रुग्नुका
 लायूषायात्रिही॥रुग्नुलेलेयुदाथेदरुलिनारुविरुषिगा॥रुग्नुका

नकालिनी॥विगावगीनलाकील॥वात्रयिदूषनात्रिषावा
 लायसुमुनीविद्याविद्यारुनेविरुषिगा॥विद्यावगीनेद्रय
 नःपीगावदसुगीवलीनवालीविलमर्गकत्रिलाःवनागहा
 वनानना॥विष्कावकुकुनकावःवाग्वाविष्कावलिनी
 वात्रलीगत्रसुकाय॥वानीनकसुभासुका॥लीमिहालय
 रुहेनाःनसुकासमयुगा॥रागपुष्करलमपुष्करुन
 दारुनमसुका॥लीमिहालयसंयना॥लीमाकाहासुन्दरी
 माध्याधनीमाननगा॥मानसुमाननगयना॥माध्यानन्यदा
 माधीमदिनामदिनकुलामहामाहाकुलमयगाःम

रुगीमरुदरुगा।मदिनाभादनित्रगा।मदिनासमर्कुल
गा।रुमनां।स्वभायाग।माभ्रनिन्दयुवद्विनी।रुदवन
न्दयविनी।रुदवनन्दयद्विनी॥यद्रूपीगायद्रवलीःय
द्रुर्कर्मविरुधिगा।नामप्रियाकांगत्रता।नामभाषनगर्य
ना॥नारुनीनारुकुलेश्वर।नारुनारुश्वरीनिमा।नामनी
नामनीनम्या।नामानन्दयुदायनी॥नारुनीकत्रयपूस्मिन्
कात्यत्रविनीयना।लाङ्गनिभुमर्षिदुष्टः।लाङ्गलीपु
यप्रिया॥वाकात्रुल्लललनालीलीलीलावतीलेया।ली
कश्यत्रगुलपीगा।लीकश्वत्रदायनी॥लावकायसूत्र

[illegible]

गम संयु अस्या सर्वमनुस्वयं दृष्टम् ॥ ॥ निवस्तु नवसंस्था
 यी सुन्या काले वगु ४५२० ॥ य ४५२० ॥ यार्थि यद्यपि सया गीमा
 गुसीं य। यानि नामानि संयुक्तं यमं गमसूनवै त्रिलशां शुभम्
 निगानि कल्यानिः नामानि तु कदाचि नशां नृन्ना मनगृह्ण
 या न्नपु ॥ गगुलगा दली नाना विना पुनः कटं यो नाल्य निन्द
 कदाच नशां सिन्दु न कन विना यो ४५२० ॥ भादिग ४५२० ॥ मि
 वा ॥ य ४५२० ॥ किं शा वन गस्या सा धुन किं वन वा गस्तु
 र्क रत्न रत्न र्क गति रत्न रत्न विवस्तु गशा वदं ४५२० ॥ यं कत्रा य
 व यस्या सच कीर्तिना नो मियमा कय यं कु र्म मत्री नमद

१
 ३५

यनयिनाम् ॥ भा ४५२० ॥ द विना नमनी यवान पि विगं सयत
 य ४५२० ॥ नूया द्या पि लु क विरु न सव द ४५२० ॥ स ४५२० ॥ द
 ४५२० ॥ पूजा याली गस्या वग ४५२० ॥ सव मीथ रिष कन
 गया ४५२० ॥ निरुस र्क ४५२० ॥ ली गस्या सक ली य ४५२० ॥
 यं क विरु गाय यो मो ना धनं ४५२० ॥ यो य वसा विरु मूय
 गाशा न यो कतार्थ सर्व गु गति र्क वी य दाले या ४५२० ॥
 काल नाम ४५२० ॥ किं त्वा द र्क न ग ४५२० ॥ ग ४५२० ॥ सुत्वा वरा
 स्था व ग ४५२० ॥ द गान का य दी ४५२० ॥ य ४५२० ॥ व ४५२० ॥
 नव मी नि सिवा सनं ४५२० ॥ र्क क ४५२० ॥ म ४५२० ॥ न ४५२० ॥ ४५२०

१२

कठिर्गं यत्र भूः पृथ्वी । इन्मान्नत्र सरु सं नृ वल्लु रुनेव स
 र्करी ॥ कूलिस्त्रययुदात्तः र्गः तात्राह किय नायव ॥ अनु
 हकायनीर्दयः ये ब्रूनाय विष्णोषत । कूलिनाययुदात्त
 र्गः तयगद्वाय नायव ॥ मल्लान्मनिमुदादयः यत्रिदि
 तं शुभयव । नाहकाययुदात्तर्गः पक्ष्मनेत्रयनायव
 ॥ नयर्ग्यदवदवर्गि ॥ मयसुद्वीरुमहादा । कूलनाम
 कयतिदिर्नय ॥ ४२ ॥ काय ॥ १० ॥ मानव ॥ ४ ॥ यथादिह
 र्गैर्द्विर्नसभाविशारदाद्वानि । सोदयर्ननुमूर्तिना

[illegible]

ॐ नमो गङ्गा भयानक ॥ मन्त्राकारि उवाच ॥ यथा गङ्गा नदी च

सिद्धांत श्रुति उक्तम्

१२१ कण ॥ मला ह्या म
द्वि न्य लक्ष

यः पुनरुवाच । स गुणमग्निरहमावृ । नाग्निश्चोत्रहयं तस्य

ग्रहवाङ्मयं न द्या ॥ १७ ॥ न यगात्रीत्यर्थं यस्याः यावत्तु वर
 यं न हि । अथ कुम्भं मसु संघर्षाः । तयं कृषि न जायते ॥ १८ ॥
 आयुः प्राप्ताश्च मेघं यथा पृथुयो गुणदि संघ दश । एव न किं की
 र्तिना प्रस्य गं कृषि क न लभु क न ॥ २० ॥ ॥ १८ ॥ १८ न द्या
 ये ॥ नाम्नी सरु सं दि द्या नी । रिन व स्य मया कृ गं १८ वरया
 मि तत्त्व गं सं घर्ष क सा ना त्सा न द्या र्त्तं शु री ॥ २१ ॥ सर्व
 यावत्तु न पृथु सं घर्ष य दु ल नो म न । सर्व को म यु द्यं वं व
 सा धं नी सु र्या व र्त्तं ॥ २२ ॥ सर्व मे र्त्तं ल मा र्त्तं स र्त्तं स र्त्तं

विनिवृत्तनी। आयुः कर्तव्यं विदुः कर्तव्यं श्री कर्तव्यं यमः कर्तव्यं ॥
२३॥ ऐन वसु वनो हस्य मरुतः वसु विस्मृ नं ॥ ऐन वं
दव गानुसु सुन्द (ये वा यु की र्ति नं) ॥ २४॥ सर्व कार्यार्थ
सिद्धार्थं प्रीति यं ऐन वं स वा कलि शरु द य मि ति सं क
ल्यादि न्य मानु धी ॥ २५॥ अ वि नि व सि वि न्य सः क न्य मु
सुख भा न्य सः देव गानु द य न्य सः गानु न्य सः स मा न्य सः
॥ २६॥ ऐन वं गि न्य सि न्य सः ल सा ट हि म द न्य नं नि ग यार्थं
गहन नं शान भय नं गनु वी ॥ २७॥ कर्तव्यार्थं गनार्थं च यु
न ता र्थं कथा ल या श ना म्भ व्वा द या र्थं च ह स्मा न् स

कृतं ली ॥ २८ ॥ अमादि युग मासु च वृत्तिरुत्तमालः
 नृसंज्ञास्तथा ह्यसमर्पणं वा हौलुलकं जसं ॥ २९ ॥
 पारल्लयकालिर्नृसंज्ञा दयमस्तु मालिनी ॥ ३० ॥ वदसं
 न्यास सनथा ॥ कामत्रात्रिणी ॥ ३१ ॥ उदयं च सकलं सुदु
 शुभायाश्चिथास्तथा ॥ श्रुतं चालं च वृद्धं ॥ ३२ ॥ नृसंज्ञा
 शकं ॥ ३३ ॥ यथि चनाशनी ॥ वदं कलिं गदगं कं ॥ गु
 दं च काकर्तं न्यासं ॥ राधमं च न कलां चनी ॥ ३४ ॥ जाननाय
 वृत्तं नृसंज्ञा ॥ श्रुतं चालं च वृद्धं ॥ ३५ ॥ नृसंज्ञा

पादयुग्मं सुत्रं ॥ ३६ ॥ आयदमस्तु कं च वृत्तं ॥ आयद
 स्त्रीनं कं नृसंज्ञा ॥ वृद्धं च मंत्रं ॥ ददि ॥ मयलुधं ॥ त्रि
 ल ॥ ३७ ॥ ३४ ॥ रवः ॥ रुसं पवि ॥ वृत्तं च वदितं नमस्तु ॥
 आयुः ॥ मयि वृत्तं ॥ नृसंज्ञा ॥ वदितं गमनं ॥ ३८ ॥ वायु
 वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ मयि वृत्तं ॥ वदितं ॥ वृत्तं ॥ वदितं ॥
 नृसंज्ञा ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥
 वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥
 वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥
 वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥
 वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥
 वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥ वृत्तं ॥

१८

ज्ञानननाथाय नमः नमः नमः ॥ निःसीमानीदनाथः
 यः ज्ञानुदेवयुवराजः ॥ ३९॥ नवैक्यासविधिदत्ताय
 शिवैक्यनननी ॥ श्रीनगसायुवकामिनेयथा ॥ अलव ॥ १०॥
 न ॥ ४०॥ शुद्धस्मृति कर्मकाशी सह सादित्यदक्षिणी नील
 कीमृगसंकाशनीलीडिनसमयुता ॥ ४१॥ अष्टादशगि
 नयनी वेगुदीक्षुद्विद्योद ॥ ४२॥ कलालवदनं नृप
 नात्रावसं वृत् ॥ ४३॥ शुद्धगमयस्यदे मयि वभूति
 प्राप्नुही ॥ दिगम्बरं वृत्तानं वरुकाख्यं मरुवली ॥ ४३॥

स्वकाशमसिपाश ॥ शुद्धदक्षविद्यागगन ॥ ४४॥ मन्त्रवद
 योनीय वनदं दुर्गागम ॥ ४५॥ आत्मवर्त्तसमायु
 गी सात्रभयसमन्तिर्ग ॥ नवैक्यासुसंलुष्टा उपेका ॥ २०
 मानवाप्रयाग ॥ ४६॥ ॥ अथ सान्निध्यं ॥ ॥
 ॥ ४७॥ ॥ साधक ॥ सर्वलोकेषु सर्वसर्वे नगगय ॥ ४८॥
 ॥ आने सुसद्वर्गादी ॥ मित्रा ॥ गमसंमिन ॥ ४९॥
 नवस्योदीशार्त ॥ दक्षिणीमिसिद्धय ॥ ५०॥ नवोद
 ननाथ ॥ दगात्मा ॥ दगावन ॥ ५१॥ दगावभा

[illegible][illegible]

[illegible]

अनुरागस्य मिसुष्टं गेहमस्तथा मयः सुमिश्रात्तातनुस्तीर्थकनिषा
सर्लगतत्वविद रुचराभञ्जनादिभिर्वदीत्यस्तु मिथिप्रा
मिथिपियागदाजात्मयोगसमानानः स्मीथद्विधालयशक्ति
नद्रकायगिस्कानः सुविष्ठस्तु विनस्तिगशातुरागिलाकगिलो
कानामिष्टलीमुदग्भमियशगित्सावनेरयीवद्यः पितृजम्बुगि २३
वज्रदशा ६०॥ इन्द्रावाइड्डुगध्याइड्डुवाइड्डुसहादय नहउल्म
याइडादेवादेवादयाईइति ॥ ६१॥ इन्द्रायुद्धमदीर्घगयाः दक्षा
इन्द्रायुद्धनाशनशङ्खनक्षत्रादग्नेर्मोइग्नेर्मोमावोसीइवासदशादशाद
मोमावोपादानीः योगादनीदयावनशङ्खीसादिदुनेकायाइड्डुया

[illegible]

३॥ १ ॥ वेद्यया न लगे नतं कय थि तस्मात्थाय हे नदी जय द्ध
को यत्र स हय गत समुखि य त्रि पाउ क ॥ ता ज्ञान व क्रम स्त्री ही ॥
य त्रि वृत्त दत्त व सोड य ड वः रा यो यो व त्रि ग वी ता य न त त म
व त्रि मि ख वृक्ष ॥ १ ॥ यं मि त्र ता क न थ ति ग ल त मा लः थ
सः ज्ञान वेद्यः म सु थ रा साः स्त्रा क य्या ख नः व द म स ड वा र्ध क न
सं घा म ज क त त वृष त्व ग म इ स ताः मुर य ही ह्मः क्रम ती न दा
व ता ज्ञाः ड य द न इ व द सः ॥ थ व द्ध र मा यो व नी ष्ट दं का लीः

यत्र यत्र स्वया क त्तः तिः थ ति द क्क नि ज न नः मि पु न
ता त ता मा ल ॥ २ ॥ मि र्ग र्ग ॥ द क्कः थि य म वि ग क ति य थ
हि क र्ग त्ता ता ह्म म त्री गी ड ड क वि द्या न व म्मा थ य सा सि च
वी नी त ॥ १ ॥ व र्ग न य श ल द वः ड या क ल म्मा व नि वः
य थ ह री श त व डः नि ता ग श तः ड थ मि इ ल द डः
वी द्या मा नि ति नः म्मा ज स नः थ म्मा त्ता न् ड ॥

॥ ३॥ जितुं स्यात् न स्यात् त्रिच ॥ ५॥ लीषमश्च मितुं
नष्टु क्रिय स्य कलमथु यल स्य भर्म ॥ विद्यादलं य
स निन कयन स्य ॥ सो रं ताश्च यमर्हः स चिव सन
ता विप स्य ॥ ॥ त श्री इ ल दान ॥ अह का त्रिह न
दाडाः मिम मा इव नष्टु क्रिया इत दाडाः कल मायुडा
अथ सना ली इ ल दान धर्म मा यव यानि इत दान

विद्यामायुवः कयन इ ल दान शुष मायुडा अवन हीत
मा काम ली इ ल दानः नाता मायुव ॥ ५ ॥ अथ ॥
सर्व सुखा निगुण सुख लख अवा प्ररुवा ली मान ॥ या
अथ गुण लख गुण मात्म युजा चिना व लंद निदयाव
न की ॥ ॥ ॥ इति ॥ य इत दानः अथ मर्हः ॥ ३ ॥ नया

५
व. मी व या दान. सुख न शानं. ॐ स्वा ता त गान या निःया
क द या या यानं. धति नः. सु ज्ञि वनः ॥ ५ ॥ सु जि बु म न्न सु
है ॥ वि व क न सु ग ॥ ७ ॥ अ सि मी नृ प ति ॥ सु ग वि ग ॥ सु
वि लु वा कं सु वि वा र्थ यः क रं. ७ दि र्थ का प्र वि न या नि वि
क्रियां ॥ ७ ॥ ॥ ध ति ता. या क र्पं वि क्रिया सु व र्ण न म
रु वः. जि बु व न क न या ७ ७ वि व क न नै क क यः ही न

क सा सु र्प र्ण याः क र मा. ही न कं ७ वा या दौ नो जा. वी
क न र्पं ज्ञा या सः. ही न कं वि वा ल या द का र्थ. ता का लं वि
क्रिया सु व न म र्णं ॥ १ ॥ ॥ इ म ति नै र्प या ति न
नि मि दा षा ॥ सु क्ता य र्णं ति. क म व थ र्णं न रा ग मः
कं ग्री न द र्थ व की. न नि ह नि मृ त् ॥ ७ ॥ कं मी कृ ता ॥
न वि ष यां प तौ तौ व र्णं नि ॥ ७ ॥ ॥ इ म ति या क वा द ता द

सुखा अष्ट उक्तम् ॥ २ ॥

हा छुट्टा ॥ २ ॥

१० नमो ग्रीना नामयं नमः ॥ १ ॥ अवं मा भूति षचः षचः
ना ला यनन थ ॥ मा भवं मा य मा स च ॥ अवी चं ॥ अमा
सुत थ ॥ विष्णुः वे ॥ अरु मद्र दन म ॥ अरु उनी कु मना म ॥
अरु वा रु वा मनन थ ॥ अरु व नी थी यती अवे द्रु वि क
सं व रा उ क ॥ अरु जी न प द्म र च दा मा द रं उ क लि क ॥

मासा श्री क निताः कालं वंदं पृथु धारु म ॥ यत द्वा
दश नामा निः सय थ च नृया द पि ॥ युष्मं ला अं यः
ग ॥ किं हीः लरु ग मा न ॥ अदा सर्व या र्थ वी निर्म
का विष्णु ला कं स र्ज च ति ॥ ०० गो थी विष्णु द्वा
दश नामा की चं समा र्प ॥ रा उ दे व ली र्वी ॥

ग थ अ त्रि प ति सु वां ग दा या न अ र्थ को या ॥ थ अ रि

: नि कि या दा ष न मा लं : अ य र्थ न व ग्रा जी न , सं का प वि
लं , धन द ग दा व . अ कौ हं लि ड लं : मृ त्तु न स मा य का स्तु
द वः सी नः स मा रु ला या . उ द वः ४॥ ५ ॥ ब्रं की वि वा रु थ
स न त्रि य क्र म , य स सु त क र्म नी मी गु र्मं वि ग्र ह , चि या
स ना ती षू ध न ष्वं . धू ष , कु ति विं य था व ना सिः न रा
धी या स्तु ४॥ ॐ ॥ हा रि रा ज स थ तिः स्य का ध न व

[illegible]

॥ अङ्गि त्रय निवृद्धि वा षे ने श्व क व य नः त्रु का य ग
का ना श्रु का मा नि य न वृ वि रुः धर्मि मा य या व त्सु म रु
त्सु (धर्म्य) ॥ गंद सि स ष्ठ जि वा व त्र य लः वा त्र क
या कः सा क वृ द्वि श लः य य ल या कः व न वृ द्वि श ल
म रु रु म ड न या कः धी ल रु त्तै यः वा व ल य र्ग ॥ १ ॥
मा ध र्म्य य म दा इ न ष ल त्री तः य कि ष मा र्थ ड नः (ग)

य ग ण् प्र ता ड दं शु त्र ड न ध मि सि तां सा धू षः म मि
रू ष न व रु ना व रु वि षः मा ना न नु ग वि ताः म धं या
वि ष न न ले ष क थी ता य र्था फ म हा ग न ॥ ॥ ॥
ला क व व रु त्र य य ल रु मी ड न वः म धू ल व र न न, ए र
व क य त म या र्थः उ गै रु वैः ल रु थिः सा धू व, धर्मो रु न
वृ द्धी व रु वः ना ता य रु ल न मा ल र्नेः उ मा ती व न ड
ए हं का ल न, य वि व क क न, ला क हा थ ६ गा य का

~~सुद~~
 नमः वरुणाय ॥ २ ॥ का (अ) न या य न ग वि गा उ वि
 न ल ॥ स्त्री लीः क स न स वि गं ह वि म म ॥ का मा म ता
 इ यो यः क काल स्यः न य वः तां नः तु ग ग का इ यी ग
 न (अ) सु व नः का या इ जै क न या ह लां स ज मि ग ई
 क म न या धा य मा न ॥ ॥ ध न द ह दा यः, ह या ध ह
 का ल स इः य धि वि गं म नू यः य प दा ह क गं ग इ य ह
 य वः ली ख न धः म र व लै उ पा, उ द नः, जा री या, म य दाः

सुद वः का न या व सा गः म डा ड गु द डः का र्थ थ ल दा वः
 (अ) न य म रा यः सुद वः इ जै न या, डा न ग इ ग न वः क
 ग न, न डाः सु द डाः ॥ ३ ॥ ग म क ग वि नि ग य यीः
 य मि वि क नि यं षा ता धा ग वि न य तिः य लै गं क ॥ नि यंः ॥
 क क मि ग वि य व मि य ली न क नी यंः ग म न य र य र गो र द
 गा व हि लं ॥ ॥ ली न कं वि न लं यं ग या सा मुः
 व ल र सु वि न न य हा नः ली न क (अ) वा र्थ यो न या ता का

वं संवा योमो लः यशस्य स उ न या मी वं संवा योमो लः सा
 मुनी तासा (मो. मो) नां ग न या व ग म ज २० अ ३ ॥ ५ ॥ गीत्य
 न मिश्र क र वे न धर्म. पता य न धन समु द्दि हा वः सू ख
 न विद्या प र धन नाती. या कृ नी ये न न म य कि मो ना हि
 ॥ ॐ ॥ धृति या का या क दं. म र्ख इ लं व न न वि द्य
 लाय. या य नं या द. धर्म म य इ स विद्या व द य का ध न म
 स न विद्या ता य. वि न न य. वि ड न मो द य क ए त म

धृति र्का या क दं स र्त्रे भा य ॥ ७ ॥ गीत्य वि द्य म र्क
 न वा सा मि या नि ग थ ॥ य नी दी ना वि द्या जी का मि न म त रं यी
 न ॥ कि न मी इ र्ज न ला क ॥ ॐ ॥ धृति ता न र मा ल कृ का र्क
 या क क. या क ॥ ए य इ र्ज न व मि य. अ व स न या वि द्याः का र्क मि मी
 आ कः ता ज ॥ ला मि या क ल मी न य स यो क र्क कः मो ज न इ र्ज न ला य
 धृति ता ल न ला लः ॥ १ ॥ ॥ न व ही स प त मं वि ल व नं ॥ य या ग
 म या ॥ क स ता र य वि नं दी ज सं वि द्या य म नं वि क मा य ता क मः ॥ ॐ ॥
 म स व ला य जी वि ना ॥ ५ ॥ ॥ ॥ स ल या य र ल न र ल